आज का पुरुषार्थ 28 Oct 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

धारणा – “अब हमें ऐसा पुरुषार्थ करना है कि अंत में केवल एक की ही याद बुद्धि में रहे .. तो बार-बार अभ्यास करे .. कोई भी समस्या में सबसे पहले वो याद आये ”

हम एक सुन्दर समय पर खड़े हैं। जिसे **पुरुषोत्तम संगमयुग** कहा जाता है। हमें इस समय अपनी स्थिति को बहुत महान बना देना है।

इतना महान कि हम संसार को बहुत कुछ दे सके। हम संसार के आत्माओं को सहारा दे सके। हम उनके **रक्षक** बन सके। उनके इष्ट **देव देवी** बनकर उनकी जन्म जन्म की कामनाओं को पूर्ण कर सके।

इसके लिए हमें अपनी स्थिति **एकबल एक भरोसे** पर ले जानी है। केवल बाबा। उसके ही सहारे जीना, उससे शक्तियाँ प्राप्त करके अपने अंदर इतना confidence बढ़ा देना कि हमारी **स्थिति** निराधार हो जाये।

समस्याएं आये, बीमारी आ जाये, कोई विशेष बात हो जाये केवल उसकी तरफ ध्यान जाये। जिसके लिए बाबा कहते हैं कि .. " **अंत में एक बाप के सिवाए कुछ भी याद न आये "**

हम सभी को बाबा ट्रेनिंग देते हैं .. अंत में केवल उस एक की ही याद रहे तो हम सहज ही इस संसार अपने घर **मुक्तिधाम** जा सकेंगे।

अगर हमें औरों की याद होगी, अगर इच्छायें बहुत होगी, पदार्थ अपने ओर आकर्षित करेंगे, देहधारियों ने अपने मोह-ममत्वों के जंजाल में हमें फंसाये होंगे .. तो अंत में यह देह छोड़ना बहुत कष्टकारी हो जायेगा।

और वह थोड़े **समय** का कष्ट भी आत्मा को बहुत कमजोर कर देगा। भले कष्ट पाने के बाद आत्मायें मुक्तिधाम में जायेंगी लेकिन सुख बहुत कम हो जायेगा।

हम सभी अपने को ऐसा महान बनायें के जैसे हमें किसी का भी सहारा नहीं चाहिए। हम स्वयं भी समर्थ हो जाये। अपने **योगबल** के आधार से, अपने **त्याग-तपस्या** के आधार से। अपने धारणाओं के आधार से।

और हम दुसरोँ को भी इसतरह सच्चा सहारा देते चले। तो चलिये आज हम सभी .. **बेफ़िक्र बादशाह** बन जाये। इस संसार में इस कांटो के जंगल में शेर की तरह अकेले ही विचरण करें।

इसका अर्थ यह नहीं कि .. हम घर-बार छोड़कर चल दे। लेकिन बहुत समर्थ, किसी भी समस्याओं से घबड़ाने वाले नहीं। निर्भय, **बेफ़िक्र बादशाह**।

स्वयं भगवान हमें साथ दे रहा है। हजार भुजाओं सहित वह हमारे साथ है। उसकी **छत्रछाया** हमारे सिर पर है। यह सब होते हुए हम निर्भय, निश्चिंत।

और यदि हमारा पहला ही **संकल्प** ऊपर की ओर जाये .. " बाबा "
.. **सर्वशक्तिमान** .. हम उन्हें आह्वान कर ले .. " आ जाओ "

यह practise हमें लम्बे काल की चाहिए। तब अंत में हमें उसकी याद आयेगी। अभी से हम practise करे भिन्न भिन्न बातों में उसकी याद आये। उसको बुला ले।

बाइक से जा रहे है, कहीं कुछ हो जाता है →

" **आ जाओ बाबा** " .. पहले बाबा का आह्वान करे, फिर किसी से कान्टेक्ट करे।ऐसी आदत निरन्तर अपने अंदर भरते चलना है।

तो आज सारा दिन हम स्वयं को इस नशे में रखेंगे →

" **मैं बेफ़िक्र बादशाह हूँ .. बाबा हजार भुजाओं सहित मेरे साथ है** "

बाबा का आह्वान करेंगे हर घन्टे में एकबार और मेहसूस करेंगे कि वो .. "
हजार भुजाओं की छत्रछाया मेरे सिर पर लगाये हुए है "

यह सीन बहुत सुन्दर होगा। **इसको अपने अंतरचित में सदा सदा के लिए समा दे** और देखे .. कितना सुन्दर अनुभव होता है। उसकी मदद का। और यह आदत पड़ जायेगी।

तो जब भी कई बात आये .. तो यह विज़न हम बना पायेंगे और **बाबा** के मदद के पात्र बन जायेंगे।

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org